रु. १०/-
वर्ष: १० • अंक: ८ • अगस्त २००९, युगाब्द ५११९

केशवसृष्टि समाचार

Total No. of pages : 20

Regn. No. MH/MR/Thane (W) 06/2008-09. Licence to post at Bhayandar (W) on 5th of every month. RN-72232/99

पत्र, फल, पुष्प और जल से निसर्गदेवता का नवचैतन्य!

केशवसृष्टि कृषि विद्यालय गुणवत्ता प्राप्त विद्यार्थीयों का

हार्दिक अभिनंदन।

प्रथम	द्वितीय	तृतीय
जितेंद्र मोकाशी ८०.८८%	नेत्रप्रभा अधिकारी ७८.५८%	सुनिल वाघ ७८.०८%

केशव सृष्टि

वार्षिक सर्वसाधारण सभा

रविवार दि. ५ जुलाई २००९
स्थान : रामरत्ना विद्यामंदिर, केशव सृष्टि

केशव सृष्टि की वार्षिक सर्वसाधारण सभा रविवार दिनांक ५ जुलाई २००९ को संस्था के अध्यक्ष मा. श्री मुकुंद चितले जी की अध्यक्षता में सुबह १०:३० बजे रामरत्ना विद्यामंदिर, केशव सृष्टि में संपन्न हुई। श्री लक्ष्मीनारायण भाला जी मुख्य अतिथि थे।

संस्था के कोषाध्यक्ष श्री सीताराम पारिक जी ने आर्थिक वर्ष २००८-०९ के Accounts (Balance Sheet) सभी के समक्ष अनुमोदनार्थ प्रस्तुत की। आवश्यक चर्चा होकर सर्वसहमति से Accounts पारित किये गये।

Accounts पारित होने के पश्चात कोषाध्यक्ष श्री सीताराम पारिक जी ने आर्थिक वर्ष २००९-१० का अंदाजपत्रक (Budget) सभी के समक्ष नुमोदनार्थ प्रस्तुत किया। विस्तुत चर्चा होकर अंदाजपत्रक पारित किया गया।

वार्षिक सर्वसाधारण सभा में केशव सृष्टि के नये कार्यकारी मंडल (२००९-२०१२)का चुनाव किया गया। चुनाव अधिकारी श्री विनीत गोयंका जी ने चुनाव हेतु प्राप्त आवेदन पत्र सर्वसाधारण सभा के समक्ष प्रस्तुत किये। केशव सृष्टि नियमावली कलम ४ (१ब) के अनुसार निम्न सदस्यों का कार्यकारी मंडल चुना गया।

१. श्री मुकुंद चितले - अध्यक्ष
२. श्री सतीश सिन्नरकर - उपाध्यक्ष
३. डॉ. श्रीकांत सर्वगोड - कार्यवाह
४. श्री हेमंत म्हात्रे - सहकार्यवाह
५. श्री रमेश पारिक - कोषाध्यक्ष
६. श्री सुरेश भगेरिया - सदस्य
७. श्री सीताराम पारिक - सदस्य
८. श्री रवींद्र साठे - सदस्य
९. श्रीमती शोभाताई थिटे - सदस्या
१०. श्री चंद्रहास देशपांडे - सदस्य
११. श्री प्रकाश राजाध्यक्ष - सदस्य
१२. श्री सतीश कलानी - सदस्य
१३. श्री राजू आपटे - सदस्य
१४. श्री अशोक गोयल - सदस्य
१५. श्री विलास भागवत - सदस्य
१६. श्री बिमल केडिया - सदस्य
१७. श्रीमती रश्मी भातखळकर - सदस्या
१८. श्री. योगेंद्र राजपुरिया - निमंत्रित सदस्य
१९. डॉ. महेश अंजिकया - निमंत्रित सदस्य

वार्षिक सर्वसाधारण सभा के मुख्य अतिथि मा. श्री लक्ष्मीनारायण भाला जी के हाथों केशव सृष्टि के वर्ष २००८-०९ के वार्षिक अहवाल का विमोचन किया गया। साथ ही साथ उत्तन कृषि संशोधन संस्था के वार्षिक अहवाल का भी विमोचन किया गया।

वार्षिक सर्वसाधारण सभा के मा. अध्यक्ष की अनुमती से केशव सृष्टि संस्था की वेबसाईट www.keshavsrushti.com का विमोचन किया गया।

केशव सृष्टि की आगामी कार्यदिशा निश्चित करने हेतु विस्तृत चर्चा होकर विविध समितीयों का गठन किया गया। बैठक के अगले चरण में मुख्य अतिथी मा. श्री लक्ष्मीनारायण भाला जी ने केशव सृष्टि के कार्य की प्रशंसा की। श्री भाला जी ने रा.स्व. संघ द्वारा मॉरिशस में प्रारंभ किये जाने वाले शिक्षा प्रकल्प की विस्तृत जानकारी सभा में उपस्थित मान्यवरों को दी।

अध्यक्षीय संबोधन में मा. अध्यक्ष श्री मुकुंद चितले जी ने सभी उपस्थितों का अभिनंदन करते हुए संस्था की कार्यवाही की प्रशंसा की। केशव सृष्टि कार्यदिशा के अंतर्गत स्थापित विविध समितीयों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा संस्था संचालन हेतु आवश्यक सभी प्रकार के सरकारी नियमों की पूर्तता सर्वप्रथम की जानी चाहिए। जो कार्य अधुरे है ऐसे कार्यों को आगामी एक वर्ष का लक्ष्य निर्धारित कर पूर्ण करने का प्रयास जारी रखे। संस्था के विकास हेतु नये नये कार्यकर्ता जोडने का आवाहन किया।

अंत में मा. अध्यक्षजी को धन्यवाद देकर बैठक समाप्त हुई।

बोध-वाक्य

समानो मंत्रः	(अथर्व वेद ६.६४.२)
समितिः समानी	हे बंधुओं! हमारे विचार समान हों । हमारी सभा सबके लिए समान हो । हम सबका संकल्प एक समान हो । हम सबका चित्त एक समान भाव से भरा हो । एक विचार होकर अपने कार्य में एक मन से लगे । इसीलिए हम सबको समान मौलिक शक्ति मिली है ।
समानं व्रतं	
सहचित्तमेषाम् ।	
समानेन वो	
हविषा जुहोमि	
समानं चेतो	
अभिसंविशध्वम् ॥	

केशवसृष्टि समाचार

मासिक

वर्ष १०, अंक ८ मूल्य रु. १०/-

अगस्त २००९ वार्षिक रु. ५०/-

संपादक : महावीर प्रसाद शर्मा

कार्यकारी संपादक : लक्ष्मण गुप्ता, शोभाताई थिटे

संपादक मंडल : विजयालक्ष्मी सामवेदी, सत्यदेव बंका, जगदिश्चंद्र पाटील।

कार्यालय : केशवसृष्टि, उत्तन, भाईंदर, जि. ठाणे.

दूरभाष : २८४५०२४७, २८४५२८५५

यह पत्रिका मुद्रक एवं प्रकाशक सुरेश भगेरिया द्वारा केशवसृष्टि के लिए **युनिटी आर्ट ऑफसेट** ३०२, वडाला उद्योग भवन, वडाला, मुंबई - ३१ से मुद्रित और केशवसृष्टि, उत्तन, भायंदर, जि. ठाणे से प्रकाशित हुई है.

अंतरंग .....

कार्यवाह की कलम से ४

RRVM ५

Teacher's Orientation Programe ८

Emotional Intelligence ९

केशवसृष्टि कृषि तंत्र विद्यालय १०

गोदान का कार्यक्रम १२

उ. वनौ. संशो. के बहुपयोगी उत्पाद १३

१०वे रा. म्हा. स्मृती व्याख्यान १४

केशवसृष्टितील प्रथमानुभव १५

श्रीगुरुजी : दृष्टि और दर्शन १६

संपादकीय

परिवर्तन से नया चैतन्य

परिवर्तन यह तो प्रकृति का नियम है। जिस ईश्वर ने सृष्टि का निर्माण किया उसीने उसके नियमित लय-विलय का क्रम निश्चित किया। जन्म-मृत्यु का यह चक्र करोडों वर्षों से अविरल चल रहा है और इसी कारण यह सृष्टि सदैव चैतन्यशील रही है। प्रकृति का यह नियम जिसने अनदेखा कर दिया वहां एक विचित्र सा ठहराव आ जाता है, प्रगति कुंठित हो जाती है और सारी व्यवस्था समस्याओं से घिरने लगती है। यह शाश्वत नियम मानवजीवन के साथ संस्था जीवन को भी सौ प्रतिशत लागू होता है। इसलिए हमें परिवर्तन का स्वागत करते हुए हमारे चैतन्यशक्ति को सदैव ताजा रखना चाहिए।

केशवसृष्टि में तो आदर्श संस्था जीवन का ध्येय लेकर हम सभी आगे बढ़ रहे हैं। हमारे साथ नए-नए व्यक्ति और संस्थाएं जुड़ रही हैं। उनके परिश्रम से कार्य भी बढ़ रहा है। संघ संस्कारों के कारण हम सभी कार्यकर्ताओं की यह धारणा बनी है कि संस्था विकास का मुख्य मापदंड है, उसकी बढ़ती मानवशक्ती! जुड़नेवाले लोग और संस्थाएं! इस दृष्टी से हमें केशवसृष्टि की प्रगति को देखना है। हमारे लिए यह गर्व की बात है कि संस्था के कार्यों के साथ विकसित कार्यकर्ताओं की संख्या भी धीरे धीरे बढ़ रही है। संघटन-कौशल, निर्णय लेने की क्षमता और साहस, व्यापक विचार एवम् दृष्टि के संबल पर हम अग्रसर होते रहेंगे, इस विश्वास के साथ केशवसृष्टी के नए कार्यकारिणी का हम अभिनंदन करते हैं। नयी कार्यकारिणी ने २१ सूत्रों की जो कार्यदिशा अपनायी है, उसकी सफलता में ही केशवसृष्टी का अपेक्षित विकास है।

संपादक

कार्यवाह की कलम से...

कि घेतले व्रत न हे आम्ही अंधतेने...

मागील कामाचे सिंहावलोकन आणि पुढील वर्षासाठी दिशादर्शी नियोजन अशा स्वरूपात केशवसृष्टीची वार्षिक सर्वसाधारण सभा पार पडली. केशवसृष्टीची नवीन कार्यकारिणी आपल्या सेवेसाठी तत्पर झालेली आहे. आपले सहकार्य आणि मार्गदर्शन यासाठी नवीन कार्यकारिणी आपल्याला प्रार्थना करत आहे.

केशवसृष्टीच्या विकासप्रक्रियेतील अवघड कालखंड मागील सर्व कार्यकर्त्यांच्या अथक परिश्रमामुळे सरलेला आहे. केशवसृष्टीचा एक आदर्श संस्था, एक आदर्श पथदर्शी प्रकल्प म्हणून पाया रचला गेलेला आहे. आपल्या सर्वांच्या प्रयत्नातून पुढील मार्ग सोपा होईल.

ऑगस्ट हा भारतीय स्वातंत्र्यलढ्याच्या विजयश्रीचा महिना आहे. स्वातंत्र्ययज्ञाच्या वेदिवर समर्पित अगणित हुतात्म्यांच्या आणि स्वातंत्र्यवीरांच्या पवित्र स्मृतींना उजाळा देण्याचे पर्व!

आपण सर्व कर्तव्य भावनेने या पर्वात सहभागी होतो. पण त्याच वेळी आपण अंतर्मुखही व्हायला हवे.

ज्या स्वातंत्र्यासाठी हुतात्म्यांनी प्राणार्पण केले ते स्वातंत्र्य खऱ्या अर्थाने आपण पूर्णत्वास नेऊ शकलोय का?

आजही कुपोषणाने मुलांचे बळी जात आहेत. सर्वदूर व व्यापक शिक्षण हे आजही स्वप्नच आहे, आर्थिक विषमतेची दरी वाढतच आहे, शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या होताहेत, देशाच्या सार्वभौमत्वाला हादरे बसतच आहेत. एक अभिजन म्हणून, स्वतःच्याही पलिकडे विचार करून या अनिष्टांवर मात करण्यासाठी दुसऱ्या स्वातंत्र्यलढ्यात स्वतःला झोकून द्यावयाची ही वेळ आहे.

हा लष्कराच्या भाकरी भाजण्याचा प्रकार असणार नाही, हे डोळसपणे घेतलेले व्रत असणार आहे.

'कि घेतले व्रत न हे आम्ही अंधतेने लब्द प्रकाश इतिहास निसर्गमाने'

असा सार्थ अभिनिवेश असणार आहे, कारण आपले ध्येय

'परं वैभवं नेतुम् एतत् स्वराष्ट्रम्' हेच राहणार आहे.

केशवसृष्टीतील सर्व प्रकल्प समाजाच्या काळानुरूप व अपरिहार्य गरजांना आपल्या सांस्कृतिक मूल्यांशी निगडीत सशक्त पर्याय म्हणून उभे आहेत.

या प्रकल्पांच्या योगे केशवसृष्टी इतरांना पथदर्शी म्हणून प्रेरणा ठरो, प्रत्येक प्रकल्पातून संघदृष्टी उत्तरोत्तर दृढ होवो या भावनेसह सर्वांना स्वातंत्र्यदिनाच्या शुभेच्छा!

– ***डॉ. श्रीकांत सर्वगोड*** – कार्यवाह, केशवसृष्टि ■

RRVM makes a father proud of his son!

Today I am very proud to say that your ex-student Mr. Sanjay Chotia gor his all papers cleared in 1st attempt at his institute, which he appears for CPL (Commercial Pilot Licence) and also got his PPL (Personal Pilot Licence) in 1st attempt at New Zealand and I must say that this is only because of Ram Ratna Vidya Mandir improved him from 49% to 78% and never looked back.

I once again thank to all staff of Ram Ratna Vidya Mandir for the support & guidance given to Mr. Sanjay Chotia during the period of his study at the campus.

Suresh Chotia

INVESTITURE CEREMONY OF R.R.V.M. 29th July 2009

It was time for the old order to pave it's way for the new. It was time for a new set of prefect to be invested with their posts officially. The solemn occasion of investiture ceremony began with the welcoming of the chief guest, Shree Jyotirmay Verma and guest of honour Mr. Vaidya.

The elected prefects such as captain of school "Jitendra Agrawal", vice-captain: Jaydev Tamrekar and overall discipline incharge Prathmesh Bhakre and other members were then invested with their post formally, by the chief guest.

The prefect council and the rest of the school were then addressed by the chief guest who qualifies as a leader.

The school group song "Hum honge Kamayab" was beautiful blend of Hindi and english version. Mrs. Anita Sahu, the principal, proposed the vote of thanks after which the programme was brought to an end .

- Kavita Singh Science Teacher

ज्ञान गंगा

अमित्रं कुरुते मित्रं मित्रं द्वेष्टिहिनस्ति च।
शुभं वेत्यशुभं पापं भद्रं दैवहतो नरः॥

जो शत्रु को मित्र बनाता है। मित्र से द्वेष करता है और उसे मारता है। शुभ को अशुभ और पाप को पुण्य मानता है। उस पुरुष का सर्वनाश हो जाता है।

(पञ्चतंत्र : ३:२३०)

RBI's Essay Competition

R.R.V.M., rocked on RBI In a Jan. 2009. Reserve Bank of India organised essay competition for school students. They declared three groups, junior, middle (IX,X) and senior group (XI-XII) R.R.V.M. got this six entries and out of this students won the prizes.

From Middle group, master Aman Agarwal bagged 3rd prize and 2000/- Rs. Cheque alongwith certificate. Master Amit Singh got consolation prize of Rs.500/- alongwith certificate from same group.

From Senior Group Three students got consolation prizes of 500/- each alongwith certificate. They were Master Aditya Agrawal, Master Viral Gadia, Master Pratik Slamm,

Master Viral Gadia Ex-XII Com.

Talk with Alumni in R.R.V.M.

On 21st June 2009, a seminer was organised by school for the students of XI & XII. It was addressed by Rahul Fofalia, alumni of RRVM who is presently specialises in e-banking from Manipal University. He enlighted the students on same topics like money & banking, commercial bank and its function, money supply etc.

He used powerpoint presentation better understanding of the students.

By Kunal Rajpurohit 12th Com.

Report on guest of the month

RRVM arranges a programme, 'Guest of the Month' every year, where in eminent personalities visit our school. This year's programme began with Dr. Harish Bhende visiting our school on July 10th 2009 at 2 pm in the school assembly hall.

Dr. Harish Bhende is one of the best Orthopedic Surgeons in India who has also assisted Dr. Ranaut in Shri Atalji's operation. He is an altruist who envisioned that there were not many orthopedic surgeons in India and so in spite of the golden opportunities he had abroad he returned back to India. Since then apart from his responsibilities as a surgeon he also conducts regular training for doctors in Asian countries.

The session was conducted for class VII to XII, in the school assembly hall from 2.00 p.m. to 3:30 p.m. The session was an enlightening experience for the students as well as the teachers. Dr. Harishji cleared many queries of the students such as 'How to take care of the bones', 'what is the required diet for proper nourishment of the bones', 'whether Complan helps in increasing height' etc. The students were enthralled by the answers given by him and his speech which was an excerpt from his experience; was a good motivation for the students to excel in their life. **- Sabita Shinde,** H.O.D. English

Visit to Meteorological Dept. Pune

On the 16th of July, Mihir and myself accompanied by our HOD of Science Jaya Parekh Didi and HOD of SST. Rupendra Singh sir, went to Meterological dept at Pune. It is the headquarter for the manufacture of the weather recording instruments, all over India. We went there to gather information for our CBSE project competition on the topic 'Weather recording devices'. Over there we met Mr. P. N. Mohan (deputy director general), who guided us and supplied us the required information about the equipments.

He showed us how to make weather instrument like cup counter anemometer, tripping bucket rain guage, sunshine recorder etc. He also showed us instruments that automatically record weather conditions like radio sound and ozone concentration finder which are sent in the air by air balloons.

With their guidance we will be making cup counter anemometer, tripping bucket rain guage, sunshine recorder and dry bulb and bulb thermometer.

We will try our best to bring lawrels to our school through this competition.

Master. Dhanesh Shah

देश का धन

बोधकथा

लाल बहादूर शास्त्री जब देश के प्रधानमंत्री बने तो उनके पुत्रों ने साइकिल से विद्यालय जाने के लिए मना कर दिया। उनके पुत्रों का कहना था कि शास्त्री जी के मंत्रिमंडल और प्रमुख अधिकारियों के बच्चे विद्यालयों में कारों से जाते हैं। शास्त्री जी सरकारी साधनों के निजी उपयोग के प्रबल विरोधी थे। उन्होंने पुत्रों को समझाने का भी प्रयास किया लेकिन बच्चों ने जिद कर ली।

इस पर शास्त्री जी ने स्वयं की कार खरीदने का निश्चय किया। कार खरीदने लायक रुपए नहीं होने के कारण उन्होंने अपने निजी सचिव से विचार विमर्श किया। उनके सचिव ने सलाह दी कि सरकार की तरफ से आपके वेतन और भत्तों के आधार पर कार खरीदने के लिए ऋण मिल सकता है, जिसकी वसुली वेतन में से ही किश्तों में की जा सकती है। आखिर ऋण लेकर कार खरीद ली गई। जनवरी १९६६ में उनके असमय निधन के कारण ऋण की अदायगी नहीं हो पाई।

सरकार ने उनके परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति को देखते हुए उनका ऋण माफ करने का निर्णय ले लिया। इस निर्णय की सूचना पत्र के माध्यम से उनकी धर्मपत्नी ललिता शास्त्री को भी दे दी गई। ललिता जी ने सरकार के निर्णय से असहमति जताते हुए उत्तर दिया कि इस विचार से मेरे दिवंगत पति की आत्मा को शांति नहीं मिलेगी। ऋण की बकाया राशि को उनकी मृत्यु के बाद मिलने वाली पेंशन, ग्रेच्युटी आदि की राशि में से काट लिया जाए।

ऐसे थे लाल बहादुर शास्त्री और उनकी सहधर्मिणी ललिता शास्त्री।

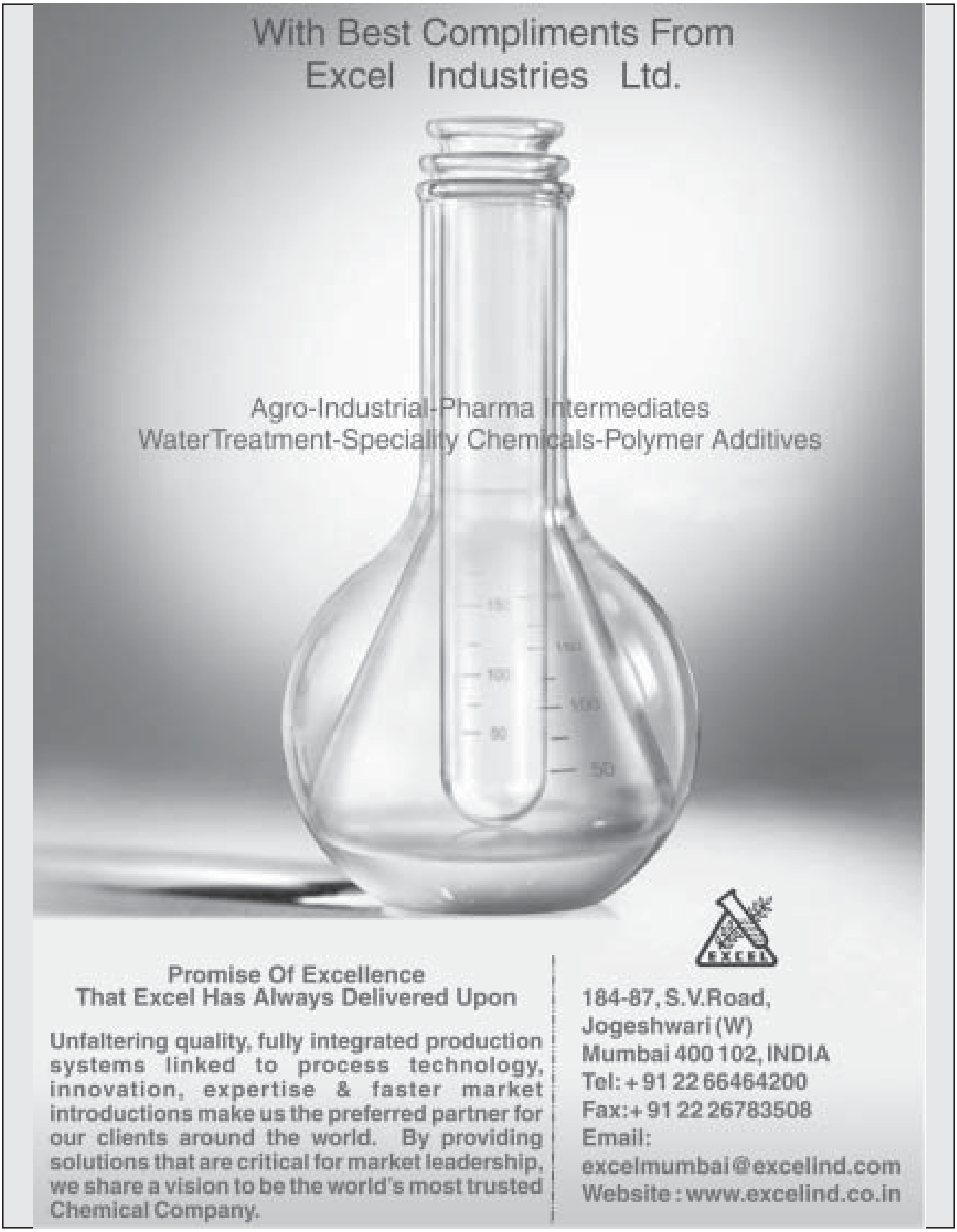
With Best Compliments From
Excel Industries Ltd.
Agro-Industrial-Pharma Intermediates
WaterTreatment-Speciality Chemicals-Polymer Additives
150
100
50
150
100
50
EXCEL
Promise Of Excellence
That Excel Has Always Delivered Upon
Unfaltering quality, fully integrated production systems linked to process technology, innovation, expertise & faster market introductions make us the preferred partner for our clients around the world. By providing solutions that are critical for market leadership, we share a vision to be the world's most trusted Chemical Company.
184-87, S.V.Road,
Jogeshwari (W)
Mumbai 400 102, INDIA
Tel: + 91 22 66464200
Fax:+ 91 22 26783508
Email:
excelmumbai@excelind.com
Website : www.excelind.co.in

Teacher's Orientation Programme

Our School always takes a lead when it comes to refresher training and up gradation of Staff members. 8th June to 10th June, 2009 was the time period during which all teachers and wardens were present in the Conference Room for the discussion about holistic development of the child as a part of Vision of school. Maa Saraswati's blessings were taken at the Inauguration by Principal didi and others. Beginning of the session was an interactive dialogue about aims & objectives of the School by Principal, Mrs. Anita Sahu. Allotments of responsibilities and Result Analysis of Board Class children were done by the Principal & suggestions to improve the results were given by Academic Chairperson Krishnaji Upadhyay to all.

Next day of the orientation was equally important as strategies to make the year successful were discussed. Time Table, Sanskar, Parent teacher Meetings, Institutional evaluation are all the pillars that from ideal school image. They were discussed throughly by Academic Head for Senior - Mr. Bhushan Upasni, Mrs. Perminder Kaur Academic Head for junior, Smt. V. L. Samvedi, Foster Parent Co-ordinator & Counsellor and Krishnaji Upadhyay. Later half of the day, School chairman shri Mahendraji Kabra addressed the session on "Role of Teacher in the School Vision" He emphasised on being a role model in front of the student in the campus. Grooming the children requires the action plan in which physical, mental & spiritual development is possible. He said that the role of a teacher is beyond teaching; it involves development as a part of SELF, FAMILY, SOCIETY & NATION.

On the last day of the programme, "Ek Ruka Hua Faisla" a wonderful movie which depicts importance of communication and perception in decision making was shown to all. Afternoon session was the time for a light mood, there was an outing for entire teaching staff at Vellenkani Beach. Teachers had a refreshing time out up to 6.30 pm, at the end of orientation programme.

Thus all three days of the Orientation program proved to be a complete refresher course. Throughout the program every participant came to know various things about school policy, schedule, and code of condcut & role of the teacher in the school's vision. The program was efficiently coordinated by Mrs. Sanjay Nandi (HOD commerce). This was an opportunity to enlighten & upgrade the school standards.

By - Anagha Prabhu
Commerce Dept.

Workshop on teaching with emotional intelligence

A workshop on 'Teaching with Emotional intelligence' was conducted for the teachers of RRVM, in the school Conference hall on 28th June, 2009 from 10 am to 5 pm. The resource persons were Dr. Sandeep Kelkar, who is M.D. DCH (Peadiatrician and Child EQ Advocate), and Mrs. Sudha Srikanth, an Educationist.

Through PowerPoint Presentations and games they discussed topics like, "Power of Emotions', 'The Emotion Coach', 'Classroom discipline', How to engage cooperation from students', 'Becoming an Emotionally intelligent teacher', etc.

They showed a clipping of the movie, 'Tare Zameen Par' where the child protagonist (Darsheel) is asked by the teacher to read. He is very slow in reading and the teacher is annoyed with him. She again and again tells him to read loudly and clearly. But the child is unable to do so. Finally the teacher loses her patience and the gradual change in teacher's temper makes even the child irritated and he makes fun of the teacher. The change in the teacher's mood from being annoyed in the beginning to blowing off with rage is to be noted.

Another clipping was from a movie 'Dahavi F' (Marathi), where the school annual day is in progress. A group of boys who had been suspended from the school had somehow managed to sneak in as one of their friend was in a group song. The scene shows how the singer child is happy to see his friends and sings with lots of enthusiasm and confidence, But one of the boys from the suspended group notices that there was a short circuit backstage which had caused fire which would ultimately consume the whole building. So he tried to stop the fire from spreading by removing the plug. This affects the sound system so the teachers come in rushing to see what the commotion was. When they saw the boys were very angry and started abusing and beating them. The boys pleaded for some time that they were only trying to help but the teacher didn't listen. Finally the boys ran away from the place and while running they actually threw off the plant pots on the way. Even when the boys wanted to improve nobody trusted them. They were targeted as bad ones.

This clipping has actually pointed out that how certain presumption of the teachers can hamper the child's progress.

These clippings threw light on the various emotions of teachers that would ultimately reflect in their students.

The session acted not only as an eye-opener for being a good teacher but also a good human being.

Reflecting on the importance of human emotions Dr. Kelkar emphasized that it is not a desirable act to suppress one's emotions but we should understand our emotions, specifically the negative ones and channelise it positively. This is so because a suppressed emotion will at some point of time burst out and the result would not be that pleasing.

The EQ workshop has really been a fruitful learning experience for all the teachers.

- Pravin Pawar English Dept.

वानप्रस्थाश्रम में महाभद्राभिषेक की महापूजा

दिनांक १९ जुलाई और २० जुलाई के दिन वानप्रस्थाश्रम के सुख, शांती और समाधान के उद्देश से शिवध्यानालय मंदिर एवं गोशाला ट्रस्टी श्री संजय अग्रवाल एवं अजय अग्रवाल जीने महारुद्राभिषेक का आयोजन किया था, इस पूजा में २० ब्राह्मणों का समावेश था सभी लोगोंने पूजा का लाभ लेते पूजा बड़े उत्साह में संपन्न हुई।

दिनांक १० जुलाई २००९ के शुभअवसरपर श्री सतनारायण एवं श्रीमती राधादेवी सिंघानिया इनके वैवाहिक सालगिरह के शुभदिन पर उन्होंने ११,००० रुपयों की ११ साल की स्नेह भोजन योजना वद्धो को समर्पित की।

मंगेश अभंग – व्यवस्थापक

केशवसृष्टी कृषि तंत्र विद्यालय प्रथम व द्वितीय वर्ष विद्यार्थ्यांचा १००% निकाल

उत्तन कृषि संशोधन संस्था संचालित केशवसृष्टि कृषि तंत्र विद्यालयाची स्थापना सन २००५ रोजी झाली. संस्थेतील अर्थ कार्यकारिणी समिती सदस्यांची कृषि ज्ञानावर असलेली अगाध श्रद्धा, ध्येय, चिकाटी व अथक परिश्रम या चतुःसुत्रीमुळे कोकणासारख्या डोंगराळ, दुर्लक्षित भागातील शेतकऱ्यांच्या मुलांसाठी शिक्षणाची विविध दालने उपलब्ध करून दिली आहेत. या संस्थेत कोकणातीलच नव्हे तर संपूर्ण महाराष्ट्रातील विद्यार्थी विविध शाखात ज्ञानार्जन करीत आहेत.

डॉ. बाळासाहेब सावंत कोकण कृषि विद्यापीठाशी संलग्न असलेल्या केशवसृष्टी कृषि तंत्र विद्यालयाच्या सन २००८-०९ या शैक्षणिक वर्षातील कृषि पदविका अभ्यास क्रमाचा प्रथम व द्वितीय वर्षाचा निकाल विद्यापीठाने जाहीर केला व तो १००% आहे. प्रथम वर्षातील प्रथम क्रमांक सुरज सुरेश वाघात यास ७८.५०% द्वितीय क्रमांक हर्षला शंकर माळी ७६.०८% तृतीय क्रमांक गणेश धवळू भोये ८५.८३% तसेच द्वितीय वर्ष प्रथम क्रमांक जितेंद्र नरेश मोकाशी ८०.८८% द्वितीय क्रमांक - नेत्रप्रभा शिवाजी अधिकारी ७८.५८% तृतीय क्रमांक - सुनिल रघुनाथ वाघ ७८.०८% मिळवून दैदिप्यमान यश मिळविले आहे.

आजच्या स्पर्धेच्या युगाकडे लक्ष देऊन संस्थेतील पदाधिकाऱ्यांनी तसेच विद्यालयातील शिक्षक वंदानी गुणवत्तेची प्रत सर्वोत्तम राखण्यात जातीने लक्ष देऊन आपला विद्यार्थी हा विद्यालयाचा प्रतिनिधीच नसून तो राज्याचा आणि देशाचा नागरिक बनविण्यासाठी प्रयत्न करण्याचे काम संस्था करती आहे. विद्यार्थ्यांनी विद्यालयात शिकलेल्या ज्ञानाचा वापर आपल्या जीवनात करावा व त्याचा जगभर प्रसार करण्यास हातभार लावावा. पुढच्या वाटचालीसाठी सर्वांना शुभेच्छा विद्यालयाचे नाव, आईवडिलांचे नाव, गुरूजनांचे नाव आणि देशाचे नाव विश्वपातळीवर प्रकाशमान करावे, हिच सदिच्छा यशस्वी व्हा, किर्तीवान व्हा!

तव ज्ञानाची भुक वेगळी।
तव दृष्टीची झेप आगळी।
ज्ञानसुर्य हा असाच तळपो।
ज्ञानमय जग सारे होवो॥

माधव फकिरा माळी
कृषि सहाय्यक

गुणवंत विद्यार्थ्यांची सूची

प्रथम वर्ष सन २००८-०९

प्रथम क्रमांक
सुरज सुरेश वाघात
७८.५०%

द्वितीय क्रमांक
हर्षला शंकर माळी
७६.०८%

तृतीय क्रमांक
गणेश धवळू मोये
७५.८३%

द्वितीय वर्ष सन २००८-०९

प्रथम क्रमांक
जितेंद्र नरेश मोकाशी
८०.८८%

द्वितीय क्रमांक
नेत्रप्रभा शिवाजी अधिकारी
७८.५८%

तृतीय क्रमांक
सुनिल रघुनाथ वाघ
७८.०८%

केशवसृष्टि कृषि तंत्र विद्यालयात
वर्धापन दिन व माजी विद्यार्थी स्नेहमिलन समारंभ संपन्न

उत्तन कृषि संशोधन संस्था संचालित केशवसृष्टि कृषि तंत्र विद्यालयात रविवार दि. २१ जून २००९ रोजी वर्धापन दिन व माजी विद्यार्थी स्नेहमिलन समारंभ

मोठ्या उत्साहात काशिनाथ पंत लिमये सभागृहात संपन्न झाला. समारंभाच्या अध्यक्षस्थानी संस्थेचे अध्यक्ष मा. चंद्रहासजी देशपांडे तर प्रमुख पाहुणे म्हणून महिको सिडस् प्रा. लि.चे अध्यक्ष मा. बद्रीनारायण जी बारवाले उपस्थित होते. कार्यक्रमाची सुरूवात सरस्वती पूजन व दिप प्रज्वलनाने झाली. विद्यालयाच्या विद्यार्थीनींनी ईशस्तवन व स्वागतगीत गाऊन पाहुण्यांचे स्वागत केले. संस्थेचे कोषाध्यक्ष श्री. हेमंत म्हात्रे यांनी प्रास्ताविक पर भाषणात सांगितले की अथक परीश्रमातून संस्थेच्या पदाधिकाऱ्यांनी आणि विद्यालय सुरू झाल्यापासून विद्यार्थ्यांच्या सक्रीय सहभागामुळे संस्थेचे रूप पालटण्यास मदत झाली. आणि यापुढेही हे निरंतर सुरूच राहील असे आश्वासन सर्वांच्या वतीने दिले. प्रमुख पाहुण्यांची ओळख व आजवर केलेल्या संस्थेतील उपक्रमाविषयीची माहिती तसेच श्री बारवाले यांनी तारुण्यावस्थेत सन १९४७ साली स्वातंत्र्य संग्रामात व संस्थान खालसा करण्यासाठी भोगलेल्या कारावासाची व संशोधनाची माहिती श्री. बिमलजी बारवाले यांनी स्वानुभव कथन करून सर्वांना मंत्र मुग्ध केले. मुलांना अभ्यासात कर्तव्य दक्षता, शिस्त व स्वावलंबनाचे धडे दिले. भारतीय संस्कृतीचा स्वीकार करून प्रगत तंत्रज्ञान आत्मसात करून सामाजिक जीवनात त्याचा पुरेपूर वापर करावा. तसेच कडधान्य पिकातील हरभऱ्यावरील घाटचे अळी, तूर पिकावीरल शेंगा पोखरणाऱ्या अळी, भाजीपाला पिकातील वांगी या फळावरील फळ पोखरणारी अळीचे व्यवस्थापन कसे करावे यावर

सध्या महिको कंपनीत संशोधनपर कार्य सुरू आहे. बी.टी. कापूस बियाणे तंत्रज्ञानाचा वापर करून उत्पादकतेत वाढ होऊ शकते. जमिनीची प्रत व पोत सुधारण्यासाठी हिरवळीच्या पिकांचा जसे ताग, धैंचा, मका, चवळी, गिरीपूष्म पिकांचा समावेश करावा. विद्यार्थ्यांच्या शंका निरसनही कार्यक्रमाच्या अंतिम टप्प्यात केले. अध्यक्षीय भाषणात संस्थेचे अध्यक्ष श्री. चंद्रहास जी. देशपांडे यांनी सांगितले की, विद्यालयात घेतलेल्या शिक्षणाचा वापर आपण आपले गाव, आपली शेती व आपला समाज सुधारण्यासाठी सर्वतोपरी प्रयत्न करावेत. तसचे उत्तन कृषि संशोधन संस्थेचे माजी अध्यक्ष व सदस्य मा. भुपेंद्रभाई टांक यांनी स्वर्गीय दामजीभाई टांक गुणगौरव पुरस्कार वितरण त्यांच्या स्वनिधीतून प्रत्येक वर्षी देण्याचे सांगितले. सन २००८-०९ या शैक्षणिक वर्षात अनुक्रमे प्रथम क्रमांक वाघात सुरज सुरेश यास रु. १००१/-, द्वितीय क्रमांक कु. माळी हर्षला शंकर हिस रु. ५०१/- व तृतीय क्रमांक भोये गणेश श्रवळु रु. २५१/- चे रोख बक्षिस देऊन गौरविण्यात आले. कार्यक्रमात संस्थेचे सर्व पदाधिकारी केशवसृष्टीचे मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री. अभय फणसेकर, श्री. सुरेंद्र ओभान, रामरत्ना विद्यामंदिराच्या प्राचार्या सौ. अनिता साहू, सर्व कर्मचारी वृंद, आजी व माजी विद्यार्थी समारंभास उपस्थित होते. कार्यक्रमाचे सूत्र संचालन श्री. माधव माळी यांनी केले तर प्रमुख पाहुण्यांचे आभार संस्थेचे सदस्य श्री. विनीत गोयंका यांनी केले.

गोदान कार्यक्रम

केशवसृष्टि गोशाला में गत जून और जुलाई महिने में गोदान के ३ कार्यक्रम संपन्न हुए। २१ जून २००९ को मुंबई के कफ परेड निवासी एवं उद्योजक श्री राम अग्रवाल जी ने अपनी धर्मपत्नी एवं बेटी के साथ करिश्मा नामके गाय का विधीवत मंत्रोचार के साथ पूजा करके गोशाला को सवत्स दान किया।

दुसरा गोपूजन सांताक्रुझ (प.) की श्रीमती द्रोपदीदेवी खेमका के हाथों किया गया। उन्होंने दान किए हुए गाय का नाम गोमती रखा गया।

तिसरा और अंतिम गोदान कार्यक्रम २६ जुलाई २००९ के दिन संपन्न हुआ। यह गोदान मालाड के श्री अंकीत अशोक गोयलजी के हाथों से किया गया. उन्होंने अपनी गाय का 'गायत्री' नामकरण किया।

सचिन पाटील

ॐ

केशवसृष्टी गोशाला

केशवसृष्टी गोशाला में पधारें, गोमाता की सेवा करें, गोवंश के सहवास में मानसिक शांति एवं अलौकिक आनंद प्राप्त करें। यह शास्त्र संमत मान्यता है कि गाय की सेवा करने से पुण्य की प्राप्ति होती है।

निम्नलिखित विविध प्रकार के दान करके आप गोशाला के आधारस्तंभ बन सकते है।

- एक दिन के यजमान रू. ११,०००/-
  (गोशाला का एक दिन का व्यय वहन करना।)
- एक समय गोशाला की सभी गायों को पंचखाद्य लड्डू खिलाना रू. ११००/-
- मासिक गोग्रास दान रू. ११००/-
- सवत्स गोदान (अधिक जानकारी के लिए गोशाला कार्यालय में संपर्क करें)

गोसेवा में सदैव, आपके कृपाभिलाषी

गोसेवा परिषद

प्रमुख कार्यालय :
३६, फिरोजा मॅन्शन, दूसरा माला, ग्रान्ट रोड पूर्व स्टेशन के सामने,
ग्रान्ट रोड, मुंबई- ४०० ००७.
दूरभाष : २३०९ ४३०६, ३०९१ ७३५०, फैक्स : २३०९ ६०२७

गोशाला :
केशवसृष्टी गोशाला, उत्तन गाँव, गोराई रोड,
भाईन्दर पश्चिम, पिन कोड : ४०११०६, जिला ठाणे, महाराष्ट्र.
दूरभाष : २८४५ १०३१, २८४५ ०२५३

॥ गवा ग्रासप्रदानेन स्वर्गलोके महीयते ॥

उत्तन वनौषधी के बहुपयोगी उत्पाद

उत्तन श्रवण तैल

पैकिंग १५ मिली, मूल्य- रू. १५/– मात्र,

घटकद्रव्य – बिल्व के शुष्क फल – बिल्व कषाय और तिक्त होने से कफ का तथा उष्ण होने से वातशामक है। नाडीवह संस्थान पर कार्य करता है।

गौमूत्र – उष्ण होने के की वजह से वातकफशामक है।

तिल तैल – उष्ण गुणधर्म के कारण उपयुक्त है।

उपयुक्तता – वृद्धावस्था में आनेवाले कर्णबाधिर्य में उपयुक्त है।

मात्रा – दो से तीन बूंदे कान में रात में सोते समय डालनी चाहिए।

बिल्व

latin name - Aegle marmels

संस्कृत – बिल्व, हिंदी, हिंदी – बेल, मराठी बेल

वर्णन – इसका २५ से ३० फूट ऊंचा वृक्ष होता है। शाखों पर कांटे होते है। पर्ण त्रिदल होते है। फल बड़े होते है। फल का कवच कठीन होता है। यह भारत में सभी जगह पाया जाता है। उपयुक्त अंग – मूल, त्वचा, पत्र, फल इ.

गुण – यह लघु वृक्ष होता है। उष्णवीर्य है। कच्चे फल का प्रयोग अग्निमांद्य, अतिसार, ग्रहणी में होता है। उदरशुल में भी लाभकारक है।

१. अरोहिने, आस्थापतोपगे, अनुवासनोपणे शोथघ्नेच महाकाषाये बिल्व पठराते ।

च सू अ. ४

२. बिल्वं सांग्रहिकदीपनीय वातकफप्रशमनानाम्॥

च सू अ. २५

पत्र स्वरस मधुमेह में उपयुक्त है।

मूल वातव्याधि, अनिद्रा, आक्षेपक, इ. में उपयुक्त है।

योग – बिल्वापलेर, बिल्वतैल, बिल्वपंचक्काथ श्रवण तैल इ.

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

डॉ. श्रुती वारंग – उत्तन वनौषधी संशोधन संस्था
केशवसृष्टी, दूरभाष – ०२२- २८४५०७२०

केशवसृष्टी वनौषधि केंद्र

अपने केंद्र द्वारा निर्मित आयुर्वेदिक उत्पादनों का निरंतर प्रयोग करें। जिवनभर उत्तम स्वाथ्य का तथा आनंदमय जीवन का सुखभोग करें। इन उत्पादनों में प्रयोग की हुई अनेक काष्ठ औषधियों का उत्पादन भी अपने प्रकल्प में प्राकृतिक खाद् द्वारा किया जाता है।

विविध उत्पादनों की सूची

उत्तन वासाकुमारी सिरप
उत्तन रूदन्ती सिरप
उत्तन प्राश
उत्तन जास्वंद तैल
उत्तन ब्राम्ही-आँवला केश तैल
उत्तन रूमालीन तैल
उत्तन श्रवण तैल
ॲलोव्हेरा जैल
ॲलोव्हेरा क्रीम
त्रिफला चूर्ण
सितोपलादि चूर्ण
तालिसादि चूर्ण
हर्बोमाल्ट-एसव्ही
हर्बो-टी
डाईजिसॉल्ट

अधिक जानकारी के लिए हमे संपर्क करें।

उत्तन वनौषधी संशोधन संस्था
केशवसृष्टी, उत्तन गाँव, गोराई रोड, भाईन्दर पश्चिम,
पिन कोड : ४०११०६ जिला ठाणे, महाराष्ट्र.
दूरभाष : २८४५ ०७२०

आर्तानाम् दुःखनाशनम्

C M Y K

दहावे रामभाऊ म्हाळगी स्मृती व्याख्यान

रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनी गेली ९ वर्षे कै. रामभाऊ म्हाळगी यांच्या स्मृतीप्रित्यर्थ व्याख्यानाचे आयोजन करत असते. दरवर्षी होणारे हे व्याख्यान प्रत्येकवेळी वेगवेगळ्या शहरात योजले जाते.

आतापर्यंत नाशिक, पुणे, सोलापूर, कल्याण इ. ठिकाणी योजण्यात आले होते. यंदाचे दहावे स्मृती व्याख्यान भारतीय विचार मंच, नागपूर या संस्थेच्या सहयोगाने शिक्षक सहकारी बँक महाल, नागपूर येथे रविवार, दि. १२ जुलै, रोजी योजण्यात आले होते.

माओवादी दहशतवादामुळे देशातील अनेक राज्ये ग्रस्त आहेत. महाराष्ट्राच्या शेजारील छत्तीसगडमध्ये तर या कारवायांनी उच्छाद मांडला आहे. नागपूर हे छत्तीसगड राज्याजवळ असल्यामुळे यंदाचे व्याख्यान नागपूर मध्ये करण्याचे ठरले. **माओवादी आतंकवाद के कारण विकास में बढता क्षेत्रीय असंतुलन** या विषयावर योजलेल्या व्याख्यानासाठी मुख्य वक्ते म्हणून छत्तीसगडचे मा. मुख्यमंत्री, डॉ. रमण सिंह उपस्थित राहणार होते. मात्र व्याख्यानाच्या दिवशीच ३२ सुरक्षा कर्मचाऱ्यांची माओवाद्यांनी निर्घृण हत्या केल्यामुळे ते येऊ शकले नाहीत. तसेच म्हाळगी प्रबोधिनीचे व कार्यक्रमाचे अध्यक्ष खा. गोपीनाथ मुंडे हे ही कार्यक्रमाला उपस्थित राहू शकले नाहीत. त्यामुळे कार्यक्रमाचे अध्यक्ष स्थान भाजपा- महाराष्ट्र प्रदेशाचे मा. अध्यक्ष आ. नितिन गडकरी यांनी भूषविले. म्हाळगी प्रबोधिनीचे महासंचालक डॉ. विनय सहस्रबुद्धे यांनी माओवादी कारवायांच्या माहितीचे सादरीकरण केले. माओवाद्यांचे नियोजन, लक्ष्यित गट व त्यातून दहशत निर्माण करुन त्या क्षेत्राचा विकास थांबवणे, विकास थांबला की लोकांना भडकावून आपले अंकीत करणे आदि विषय सादरीकरणातून पुढे आले. या सर्वाचा परिणाम म्हणून देशभरात आज विकासाच्या कार्यात निर्माण झालेले असंतुलन त्यांनी उपस्थितांना ज्ञात करुन दिले.

मा. नितिन गडकरी यांनी माओग्रस्त भागातही विकास कसा करता येईल. याबाबत त्यांनी अनुभवलेले प्रयोग सर्वांसमोर मांडले. सरकारची भूमिका आणि माओवाद्यांशी कसे लढले पाहिजे हे त्यांनी स्पष्ट केले. त्याचबरोबर या भागातील खनिज संपत्तीचा उपयोग विकासासाठी केला तर ह्या प्रश्नाला समाधानकारक उत्तर देता येईल हे ही त्यांनी आवर्जून सांगितले.

कार्यक्रमाचे सूत्र संचालन प्रबोधिनीचे कार्यकारी संचालक श्री. रवींद्र साठे यांनी केले तर प्रास्ताविक व सर्वांचे स्वागत प्रबोधिनीचे विश्वस्त आ. देवेंद्र फडणवीस यांनी केले. भारतीय विचार मंचाचे श्री. गुरुनाथ मोडक यांनी आभार प्रदर्शन केले. संपूर्ण वंदे मातरम्ने कार्यक्रमाची सांगता झाली.

प्रबोधिनी की ओर से आयोजित मासिक कार्यक्रम प्रतिवेदन
मई –२००९

क्र.	दिनांक	कार्यक्रमों के नाम	सहभागियोंकी संख्या	स्थान	समय
१.	२९-३० अप्रैल १ मई २००९	मानवाधिकार चर्चासत्र	५९	ज्ञान-नैपुण्य केंद्र	३ दिन
२.	२०-२३ मई, २००९	भारतीय जनता पार्टी कुरुद विधानसभा कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग	१७	ज्ञान-नैपुण्य केंद्र	४ दिन

C M Y K

केशवसृष्टितील प्रथमानुभव

''दिव्यत्वाची जेथे प्रचिती। तेथे कर माझे जुळती'' आपल्या केशवसृष्टी, कृषी विद्यालयाचा विस्तार व विकास पाहता वरील सुभाषितांशिवाय दुसरे शब्दच सुचत नाहीत. खरं तर मला येथे येऊन म्हणतात त्याप्रमाणे नव्याचे नऊ दिवस ही झाले नाहीत. पण विद्यालयात प्रवेश केल्याबरोबरच आपण अक्षरशः भारावून जातो. मोहून जातो. संपूर्ण विस्तीर्ण परिसरात पसरलेला हा नयनरम्य निसर्ग पाहून जो मनुष्य आपले देहमान विसरणार नाही तो मानवच नाही.

अहो! आजच्या सभोवताली पसरलेल्या सिमेंट क्राँकीटच्या जंगलात जेथे मानवाला शुद्ध हवा व शीतल छाया दुर्लभ झाली आहे. तेथे आपल्या कृषी विद्यालयात निसर्गाने जणू काही आपल्यातील सर्व कलागुणांची मुक्तहस्ताने उधळण केली आहे. असाच भास होतो. ह्या ठिकाणी असलेल्या आंबा, केळी, नारळ, काजूच्या बागा, विविध प्रकारचे वृक्ष, वेली भव्य असे तलाव, नाले वनराई बंधारे हे पाहून आपणांस जणू काही निसर्गाची खरी ओळख होते. तसेच येथील दत्त मंदिर हे मनाला समाधान देणारे आहे.

अत्यंत धावपळीच्या धकाधकीच्या जीवनात जगत असताना आपण जेव्हा विद्यालयात प्रवेश करतो तेव्हा एका अनोख्या अध्यात्मिक शांत वातावरणाने आपणांस ताजेतवाने वाटते जणू काही प्रचंड ध्वनि प्रदूषणातून आपण एखाद्या शांत धीर गंभीर ऋषी मुनींच्या आश्रमात प्रवेश केल्यासारखे वाटते. आणि ह्या पवित्र वातावरणात आपले मन प्रसन्न तर होतेच पण ताजेतवाने होऊन नव्या जोमाने, नव्या उत्साहाने नव्या उमेदीने काम करण्यास आपण लगेच तयार होतो. आणि ही किमया अर्थात विद्यालयातील वैभवशाली निसर्गाची आहे हे आपणांस मान्यच करावे लागेल.

ह्या संपूर्ण परिसरात फेरफटका मारताना व तेथील निसर्गाची विविध रूपे पाहताना आपण आपले राहत नाही. स्वावलंबन, स्वयंशिस्त, श्रमप्रतिष्ठा, आपुलकी, प्रेम, जिव्हाळा, वात्सल्य, नवनिर्मितीचा आनंद इ. अनेक सद्गुणांची ओळख हा निसर्ग आपणांस सहज व तितक्याच प्रभावीपणे करून देतो.

खरं तर माझे मन आधीच थोडेसे आध्यात्मिक वृत्तीकडे चटकन ओढले जाणारे असल्याने तेथील वातावरणाने मी खरोखरीच अंतरबाह्य भारावून जाते. 'वृक्षवल्ली आम्हां सोयरे वनचरे पक्षिणी सुस्वरे आळविती' ह्या संतश्रेष्ठ तुकाराम महाराजांच्या कवनांची प्रचिती तर येथे पावलो पावली येते. आपण नकळत ह्या निसर्गाच्या प्रेमात पडतो. फुले, फळे, वेली, फळभाज्यांचे मळे, वृक्ष राजांची दाटी ही तर नित्याचीच गोष्ट. पण ह्या निसर्गाकडून आपण शिकतो ते सहकार्य येथील सर्व सहकारी हे अत्यंत मन मिळावू असून एकमेकांना समजावून घेणारे आहेत. त्यामुळे आपण आपल्या माणसांमध्येच आहोत अशी सुरक्षिततेची व आपले पणाची जाणीव सतत आपणांस भक्कम आधार देत राहते.

खरं तर भारत हा कृषीप्रधान देश आहे. असे आपण फक्त म्हणतो कारण ७०% शेती व्यवसायावर अवलंबून असणारे भारतीय आज खऱ्या अर्थाने ५२% ही शेतीवर अवलंबून राहिले नाहीत. आणि ह्याचे एकमेव कारण म्हणजे औद्योगिकरण. प्रत्येक जण फक्त स्वच्छ सुंदर कपड्यांमधून ऑफिसमध्ये जाऊन कारकूनी करु इच्छितो. पण काळ्या मातीत घुसून घामाच्या धारांनी धरित्रीला न्हाऊ घालणारा व त्यातूनच मोती पिकवणाचा शेतकऱ्याची भूमिका बजावण्यास कोणीही तयार होताना दिसत नाही. अशावेळी कृषी विद्यालयातील ही हरितक्रांती पाहून प्रत्येकाचा ऊर अभिमानाने भरून येतो. व माजी पंतप्रधान मा. श्री. लालबहादूर शास्त्रीची 'जय जवान जय किसान' ह्या घोषणेची आठवण मनात सतत येत राहते.

ह्या विद्यालयात मला ह्यापुढेही प्रदीर्घ सेवा करण्याची संधी प्राप्त होवो. अशी ईश्वराकडे मी विनम्र प्रार्थना करते.

जय हिंद! ***सौ. मनिषा हरेश्वर जाधव***

धर्मसत्ता का स्थायी आधार हमारा अमरत्व का रहस्य

अस्थायी आधार पर अस्थायी अस्तित्व

हम जरा विश्व-इतिहास के पृष्ठ पलटें। हम देखने का प्रयत्न करें कि किसी भी देश के अजर-अमर राष्ट्रजीवन का निर्माण करने में क्या वहाँ की राजसत्ता के प्रयोग के थोथे विचार और तत्क्षण फलेच्छा ने सचमुच सहायता की है? भूतकाल में ऐसे अनेक साम्राज्य रहे हैं, जो पूर्णरूपेण राजसत्ता पर निर्भर थे। उदाहरण के लिए - फारस अपनी सभी प्रकार की सुरक्षा एवं प्रगति के लिए पूर्णतया सम्राट पर ही निर्भर था। सम्राट की सत्ता सर्वोच्च थी। वह जनजीवन के सभी पहलुओं का नियमन करता था। धर्म का निर्णायक भी वही था। कुछ समय के लिए वहाँ के लोग निश्चिंत और सुखी थे, किंतु उनके राष्ट्रजीवन का संपूर्ण प्रासाद अरब आक्रमण के एक ही धक्के में धराशायी हो गया। रोम और यूनान की भी यही गति हुई। यह इस कारण नहीं हुआ कि इन साम्राज्यों के पास संपत्ति अथवा उत्तम प्रबंध या सेना का अभाव था, वरन् वे सभी चीजें राजा की राजनैतिक सत्ता की बालू की नींव पर खड़ी थीं। जैसे ही अल्प काल के लिए भी उस राजसत्ता का ध्वंस हुआ, उनकी संपूर्ण सभ्यता, उनका धर्म और उनकी राष्ट्रीयता धमाके के साथ ऐसे धराशायी हो गई कि विश्व-मंच पर पुन: कभी उसका प्रकट होना भी असंभव हो गया। एक के बाद एक कई देशों का आत्मपतन हुआ। वे सब इस्लाम के सामने झुक गए और सदैव के लिए मुस्लिम-राष्ट्र बन गए।

हमारे अमरत्व का रहस्य

किंतु हमारे देश की कहानी एक अन्य प्रकार का चित्र प्रस्तुत करती है। हमारे समाज को अत्यंत बर्बर जातियों के अगणित आक्रमणों का सामना करना पड़ा था। हमारे समाज पर इन शत्रु-शक्तियों का कुछ काल के लिए राजनैतिक आधिपत्य भी बना रहा। कभी-कभी तो यह आधिपत्य कतिपय शताब्दियों तक चला। रावण के काल से लेकर अब तक समय-समय पर अधर्म ने अपनी संपूर्ण विनाशकारी नग्न शक्तियों से यहाँ शासन किया है। उस अंधकारपूर्ण समय में जब औरंगजेब शासन करता था, समर्थ रामदास के समान एक महान वीर संत तक के सकरुण उद्गार थे कि हिंदू-समाज को पूर्ण विनाश से बचाने का सामर्थ्य केवल परमात्मा के अवतार को ही है। तत्पश्चात् चालाक अंग्रेज ने भी हमारे राष्ट्रजीवन को उच्छिन्न करने के प्रयास किए। आज भी अधार्मिक तत्त्वों का ही उत्कर्ष है। किंतु इन भयंकर संकटवेलाओं का सामना कर हमारा समाज आज भी जीवित है। बारंबार यह अपनी भस्म में से उदित हुआ तथा दुष्ट शक्तियों के फाँसी के फंदे को नष्टकर इसने धर्म-राज्य की स्थापना की। वही गौरवशाली परंपरा आज भी सदैव की भाँति आदर्शवाद और राष्ट्रीय नवयौवन के सामर्थ्य से युक्त अखंड, अजस्र गति से चली आ रही है। यह चमत्कार किस प्रकार घटित हुआ? इस अमरता का गूढ़ रहस्य किस बात में है? भीषण से भीषण विषप्रहार के बाद भी समाज की मृत्यु को

चुनौती देने की चिरजीवन क्षमता का रहस्य क्या है?

अस्तित्व का आधार स्थायी धर्मसत्ता

यह बात अति स्पष्ट है कि हमारे राष्ट्रीय अस्तित्व का आधार राजकीय सत्ता कभी नहीं रहा, अन्यथा हमारा भी भाग्य उन राष्ट्रों से अच्छा नहीं होता, जो आज केवल अजायबघर की दर्शनीय वस्तु मात्र रह गए हैं। राजकीय सत्ताधारी हमारे समाज के आदर्श कभी नहीं थे। वे हमारे राष्ट्रजीवन के आधार के रूप में कभी स्वीकृत नहीं हुए। संपत्ति एवं सत्ता के ऐहिक प्रलोभनों से ऊपर उठे हुए और सुखी, श्रेष्ठ गुणों से संपन्न एवं एकात्मता से युक्त समाज की स्थापना के लिए अपने को समग्रभावेन समर्पित करनेवाले संत-महात्मा ही इसके पथ-प्रदर्शक रहे हैं। वे धर्मसत्ता का प्रतिनिधित्व करते थे। राजा तो उस उच्चतर नैतिक सत्ता का एक उत्कृष्ट अनुगामी मात्र था। अनेक बार विपरीत परिस्थितियों में एवं आक्रामक शक्तियों के कारण अनेक राजसत्ताओं ने धूल चाटी, किंतु धर्मसत्ता समाज को छिन्न-विच्छिन्न होने से सदैव बचाती रही।

भ्रांत धारणा से मुक्त हो

यहाँ हम उस भ्रांत धारणा को स्पष्ट कर देना चाहते हैं, जिसने आज हमारे विचारों को आच्छादित कर रखा है। जब धर्म तथा आध्यात्मिकता जैसे शब्दों का उच्चारण किया जाता है, तो तुरंत कहा जाता है कि धर्म को राजनीति में क्यों लाते हैं? धर्म-संबंधी हमारी गलत धारणा और उसे पाश्चात्य लोगों की 'रिलीजन' की कल्पना के साथ एकरूप करने की भूल में से इस प्रश्न का उदय हुआ है। धर्म (रिलीजन) की मतांध कल्पना तथा राज्यसत्ता पादरियों के हाथ में होने के कारण पाश्चात्य देशों ने बहुत सदियों तक कष्ट भोगे हैं। उक्त कल्पना से धर्म की हमारी कल्पना प्रकाश और अंधकार के समान भिन्न है। धर्म अथवा आध्यात्मिकता कोई अंधमत नहीं है, अपितु वह संपूर्ण जीवन का एक दृष्टिकोण है। राजनैतिक अथवा आर्थिक क्षेत्रों के समान धर्म राष्ट्रजीवन का कोई अलग क्षेत्र नहीं है। हमारी दृष्टि में आध्यात्मिकता जीवन की एक व्यापक दृष्टि है, जिसे सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों को अनुप्राणित और उन्नत कर उनके बीच समन्वय की स्थापना करनी चाहिए, जिससे मानव-जीवन अपने सभी पहलुओं में पूर्णत्व को प्राप्त करे। यह हमारे राष्ट्र-तरु का जीवनरस है, हमारी राष्ट्रीय सत्ता का प्राण है।

खंड ११ पृ. ७४-७९

श्री गुरुजी : दृष्टि और दर्शन

केशवसृष्टि समाचार

यह एक पंजीकृत मासिक पत्रिका है, जिसका संस्करण राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रकाशित होता है। यह मासिक पत्रिका गत सात साल से प्रकाशित हो रही है। इसमें आप पायेंगे केशवसृष्टि संस्था की दैनंदिन गतिविधियाँ, आयुर्वेद, कृषि, गौसम्पदा, शिक्षण एवं सामाजिक प्रबोधन पर आधारित लेख।

सदस्यता फॉर्म

संपादक
केशवसृष्टि समाचार,
केशवसृष्टि, उत्तन-भाईंदर (प.),
जि. ठाणे - ४०१ १०६ दूरभाष :-(०२२) २८४५०२४७, २८४५२८५५

मैं केशवसृष्टि समाचार इस मासिक पत्रिका का ग्राहक बनना चाहता/चाहती हूँ।

मैं इसके लिए रु. .... मनीऑर्डर द्वारा संलग्न कर रहा/रही हूँ।

*(कृपया मनीऑर्डर '**केशवसृष्टि समाचार**' के नाम जारी करें।)*

केशवसृष्टि समाचार के लिए सदस्यता दर
मासिक ५ रु., वार्षिक ५० रु.

नाम ....

पता ....

....

दूरभाष/मोबाईल..

हस्ताक्षर

Book your space today

KESHAV SRUSHTI SAMACHAR

Special Advertisement Package. (Annual)

ADVERTISEMENT RATES (For General issuesonly)

		Monthly		Yearly	
	Size	B/W	Colour	B/W	Colour
Full Page	22 x 15 cm.	5000/-	10000/-	45,000/-	96,000/-
Half Page	11 x 15 cm.	3000/-	5000/-	28,800/-	45,000/-
Inside Cover	22 x 15 cm.	--------	10,000/-	---------	96,000/-
Back Cover	18 x 15 cm.	--------	15,000/-	---------	1,44,000/-
Page Sponsor	03 x 15 cm.	2000/-	-----------	24,000/-	

KESHAV SRUSHTI SAMACHAR
Advertisement ORDER FORM

Date :

To,
Keshav Srushti Samachar,
Keshav Srushti, Uttan,
Bhayandar (W) Dist: Thane - 401 106
Tele: 022-28450247/28452855

Dear Sir,
We hereby confirm the booking for Advertisement space in your above magazine for the

issue ______________ OR from ______________ to ______________

Size ______________ Type ______________ Rate ______________

Material : ______________

Payment Terms : ______________

Thanking you,
Yours faithfully,

seal & signature of authority

Company's Name, Address

Order Executed By : ______________

Remark : ______________

Regn. No. MH/MR/Thane (W) 06/2008-09.

RN-72232/99

प्रेषक :
केशवसृष्टि, उत्तन, भायंदर, ठाणे - ४०११०६
दूरभाष : २८४१०२४७, २८४५२८५५

प्रति,

यह पत्रिका मुद्रक एवं प्रकाशक सुरेश मनोरिया द्वारा केशवसृष्टि के लिए यूनिटी आर्ट ऑफसेट, ३०२, वडाला उद्योग भवन, वडाला, मुंबई - ४०० ०३१ से मुद्रित और केशवसृष्टि, उत्तन, भायंदर, जि. ठाणे से प्रकाशित हुई है. - संपादक : महावीर प्रसाद शर्मा